Knowledgeable Research –Vol.1, No.6, *January 2023*

Web: http://www.knowledgeableresearch.com/

आधुनिक संस्कृत कविता और महर्षि अरविन्द का आध्यात्मिक राष्ट्रवाद

डॉ.अरुण कुमार निषाद
असिस्टेण्ट प्रोफेसर (संस्कृत विभाग)
मदर टेरेसा महिला महाविद्यालय, कटकाखानपुर, द्वारिकागंज, सुल्तानपुर|
मोबाइल –8318975118, 94540 67032,
ईमेल: arun.ugc@gmail.com

****

शोध-सारांश

अपने राष्ट्र की भूमि, जनसमूह, संस्कृति, सभ्यता, इतिहास, धर्म, साहित्य, कला, राजनीति, जीवन दर्शन आदि के प्रति लोगो के मन में गरिमा और महिमा का जो नैसर्गिक स्वाभिमान हुआ करता है उसे ही राष्ट्रवाद कहते हैं | कविवर मैथिलीशरण गुप्त ने लिखा है-

"जिसको न निज गौरव तथा निज देश का अभिमान है |

वह नर नहीं नर- पशु निरा है और मृतक समान है" ||

राष्ट्र शब्द का अर्थ बहुत ही व्यापक है | 'राजति राजते वा इति राष्ट्रम्' इस अर्थ में 'राज् दीप्तौ' धातु से 'सर्वधातुभ्य: ष्ट्रन्' (औणादिक सूत्र) से ष्ट्रन् प्रत्यय होने पर राष्ट्र शब्द निष्पन्न होता है | राष्ट्रीय चेतना किसी स्थान विशेष, काल या पात्र का निरूपक न होकर एक सार्वभौमिक नित्य-भाव के रुप में अवस्थित है | यह शाश्वत प्राणशक्ति जिसे हम राष्ट्रीय चेतना कह रहे हैं, वह रहती है अपने देशवाशियों के मनोमस्तिक में, उनके हृदय प्रदेश में | The feeling of nationlity lives in the minds and hearts of its people . यही भारत का राष्ट्रीय स्वरूप है | संपूर्ण संस्कृत साहित्य राष्ट्रवाद से ओत-प्रोत है , पर विडम्बना यह है सर्वसाधारण की भाषा न होने के कारण लोक इन ग्रन्थों में छिपे रहस्य से अभी तक अनभिज्ञ हैं | ऋग्वेद से लेकर लौकिक साहित्य राष्ट्र की सभी संकल्पनाओं और उससे सम्बन्ध विचारों से भरा पड़ा है | ऋग्वेद के वाक् सूक्त में ऋषि कहते है-

"ऋतेन राजन्ननृतं विविञ्चनं मम राष्ट्रस्याधिपत्यमेहि"

किसी कवि ने कहा है –

"उत्तरं यत्समुद्रस्य हिमाद्रेश्चैव दक्षिणम् |

वर्षं तद् भारतं नाम भारती यत्र सन्तति:||"

यजुर्वेद में लिखा है कि- राष्ट्र स्वतंत्र हो , वह जन हितकारी हो तथा विश्व कल्याण के लिए प्रयत्नवान हो –

"जनभृत्य राष्ट्रदा राष्ट्रं मे दत्त , विश्वभृतस्थ राष्ट्र दा |

राष्ट्र मे दत्त , स्वराज्यस्थ राष्ट्र दा राष्ट्रं मे दत्त" ||

शुक्ल यजुर्वेद में भी वर्णित है –"........योगक्षेमं न: कल्पन्ताम्" ||

अन्यत्र भी –

इत्था हि सोम इन्मदे ब्रह्मा चकार वर्धनम् |

शविष्ठ वज्रिन्नोजसा पृथिव्या नि:शशा अहिमर्चन्ननु स्वराज्यम्"||

अथर्ववेद के पृथ्वी सूक्त (12/1) तथा राष्ट्राभिवर्धनम् सूक्त (1/29) में ऋषियों ने इसी बात का वर्णन करते हुए कहा है -

अभिवृत्य सपत्नानभि या नो अरायत: |

अभिपृतन्यन्तं तिष्ठाभि यो नो दुरस्यति ||

मनुस्मृति में राष्ट्रीय चेतना का प्रकटन इस रूप में किया गया है –

एतद् देशप्रसूतस्य सकाशादग्रजन्मन: |

स्वं स्वं चरित्रं शिक्षेरन् पृथिव्यां सर्वमानवा:" ||

आधुनिक संस्कृत कवि भी अपने काव्यों में राष्ट्रवाद को प्रतिबिम्बित कर रहे हैं |

बीज शब्द : *महर्षि अरविन्द, आध्यात्मिक राष्ट्रवाद, आधुनिक संस्कृत कविता |*

****

महर्षि अरविन्द भारत के महान विचारकों में से एक थे | समकालीन भारतीय दार्शनिकों के बीच उन्होंने राष्ट्र और राष्ट्रवाद की सबसे विस्तारपूर्वक व्याख्या की |वे राष्ट्रवाद को ईश्वरीय देन के रुप में स्वीकार करते हैं |महर्षि अरविन्द राष्ट्रवाद को शक्ति का प्रतीक मानते थे | महर्षि अरविन्द का राष्ट्रवाद सार्वभौमिक था | यह मानव एकता के आदर्श पर आधारित था | महर्षि अरविन्द का राष्ट्रवाद संकीर्ण तथा कट्टरता पूर्ण नहीं था, बल्कि उसका रुप विश्वराज्यवादी था | उनके लिए राष्ट्र की सेवा एक धार्मिक साधना थी | वे कहा करते थे कि राष्ट्रवाद मानव के सामाजिक एवं राजनीतिक विकास के लिए आवश्यक है |

राष्ट्रवाद की परिभाषा देते हुए महर्षि अरविन्द ने कहा है – " राष्ट्रवाद केवल एक राजनीतिक कार्यक्रम नहीं है | राष्ट्रवाद एक धर्म है जो परमात्मा की देन है | राष्ट्रवाद एक धर्म है | जिसे तुम्हें धारण करना पड़ेगा | यदि तुम राष्ट्रवादी बनना चाहते हो एवं यदि तुम राष्ट्रवाद के रस धर्म को स्वीकार करते हो तो तुम धार्मिक भावना सहित इसको स्वीकार करो| तुम इस बात का स्मरण रखो कि तुम

परमात्मा के साधन हो, राष्ट्रवाद को कुचला नहीं जा सकता। राष्ट्रवाद परमात्मा की शक्ति के आधार पर जीवित रहता है। इस्के विरुद्ध चाहे किसी भी प्रकार के शस्त्र प्रयोग में लाए जाएं, इसको कुचलना असंभव है। राष्ट्रवाद सदैव अमर रहेगा।"

जयशंकर प्रसाद की कालजयी रचना 'कामायनी' में बन्धुत्व,समरसता,एवं समन्वयवाद का सन्देश देते हुए श्रद्धा मनु से कहती है –

"औरों को हँसते देखो मनु हंसो और सुख पाओ |

अपने सुख को विस्तृत कर लो ,सबको सुखी बनाओ ||"

प्रो.'अभिराज' राजेन्द्र मिश्र अपने काव्यशास्त्रीय ग्रन्थ "अभिराज राजयशोभूषणम्" में लिखते हैं-

तत्रऽनेको बिन्दवो मम्मटोक्तव्यवहारज्ञान एवान्तर्भवति |

राष्ट्रभक्त्यादीनि प्रयोजनानि पुनर्वयमपि अभिनन्दाम: |

तत्समर्थितमेव रेवाप्रसादद्विवेदैरपि युगावश्यकता पूर्ते: धर्मरक्षा

राष्ट्रदेवप्रबोधादीनामपि काव्यप्रयोजनत्वमिति द्विशद्धि ||

पण्डिता क्षमाराव-पण्डिता क्षमाराव राव आधुनिक संस्कृत साहित्य की सुप्रसिद्ध लेखिका हैं| सत्याग्रह गीता में वे लिखती हैं कि गुलामी में राष्ट्र कोई उन्नति नहीं कर सकता है।

पारतन्त्र्याभिभूतस्य देशस्याभ्युदय: कुत: |

अत: स्वातन्त्र्यमाप्तव्यमैक्यं स्वातन्त्र्यसाधनम् || "

डॉ. मिथलेश कुमारी मिश्रा- 'चन्द्रचरितम्' महाकाव्य में लिखती हैं कि सुभाषचन्द्र बोस ने राष्ट्र की स्वतन्त्रता के लिए उन्होंने अपना सम्पूर्ण जीवन लगा दिया | नेताजी सुभाषचन्द्र बोस के लिए राष्ट्र सर्वोपरि था | उन्होंने अपने नेताजी की उपाधि को चरितार्थ कर दिया | स्वतन्त्रता संग्राम की अग्नि में स्वयं को समर्पित करने वाले वह अग्रगण्य व्यक्ति थे | कतिपय पंक्तियाँ द्रष्टव्य हैं –

मातृभक्ति सामानान्या

पितृभक्ति सुखावहा |

उत्तमा गुरूभक्तिश्च

राष्ट्रभक्तिर्विशिष्यते ||

x x x

भारतीया नु अद्याप्याशान्विता

आगमिष्यति सुभाष: कदाचित्स्वयम् |

किन्तु नैवागतोऽसौ गतो वा गत-

स्तस्य दर्शनमितो दुर्लभं भावितम् |

केवलं तत्सस्मृति: ध्यानमध्ये स्थिता

भारतस्यापि हृदये सदा विद्यते |

नैव भूतो न भविता कुतः कश्चिदपि |

तस्य सदृशोऽपि नेता न संदृश्यते ||

संस्कृत कवयित्री माधवी शास्त्री अपनी ‘नववर्ष-शुभकामना’ कविता के माध्यम से यह इच्छा करती है कि-केवल मुझे या मेरे भारत को ही नहीं बल्कि सम्पूर्ण विश्व को सुख –शान्ति प्राप्त हो |

जनास्तु सर्वे हि सुखेन युक्ताः |

भवन्तु सर्वे हि च दुःखमुक्ता: |

शुद्धं च भूयाज्जनता-मनस्तु |

देशे-विदेशे सुखशान्तिरस्तु ||

प्रो.सुश्री संतोष वर्मा- इन्होंने अपनी कविता ‘कथय कथम्’ में लिखती है-

राष्ट्रभक्तिर्विना राष्ट्रसन्धि विना, राष्ट्रशक्तिर्भवेत् कथय कथम् |

ज्ञानस्फुरणं विना प्रेमप्रवणं विना स्नेहवर्णं भवेत् कथय कथम् ||

डॉ. श्रीमती लीना रस्तोगी लिखती हैं-

विजयते भारतभू: पावनी इयं ननु सकलमनमोहनी |

मुकटोऽयं हिमवानुत्तुंग: जलधिरधस्ताच्चलत्तरंग: ||

वीच्यर्चित-चरणा विराजते चरचरामोदनी ||

इयं ननु सकलमनमोहनी ||

डॉ. मनोरमा तिवारी लिखती हैं-

जयतु जयतु जन्मभूमि: | जयतु देशो भारतम् ||

जयतु जगति प्रथितमहिमा , भूरि –भूरि प्रशंसिता ||

डॉ.मृदुला शर्मा -समकालीन कवयित्रियों में डॉ. मृदुला शर्मा का नाम बड़े की सम्मान के साथ लिया जाता है | अपनी कविता मेंदेश के वीरों को सम्बोधित करती हुई वह कहती हैं-

उत्तिष्ठ देशवीर ! विक्रमं कुरुष्व रे

राष्ट्र स्वतंत्रतैकता –रक्षा विधत्स्व रे ||

गर्जासु भीषणं यथा पंचाननो वने

रुद्रो यथा भयंकर: प्रलयस्य ताण्डवे

काश्मीरघाटिकासु वै किंजलकराशिसु

चान्दनवनस्य पुण्यधरा नाम धामसु

ये नागफणी वल्लरी बीजं वपन्ति वै

तेषां प्रणाशने व्रतं भीम कुरुष्व रे ॥

डॉ. उमा एम.देशमुख- आधुनिक संस्कृत साहित्य की कवयित्री डॉ. उमा एम. देशमुख अपनी 'हे प्रिय भारत ! हे प्रिय भारत ! कविता में लिखती है –

वयं च राष्ट्र सेवका :

समस्तदेव पूजका

विविध धर्म रक्षका:

परस्परस्य भावका:

अमृता: सकला: वयम् ॥

सौ.अनुराधा तारगाँवकर- कवयित्री सौ.अनुराधा तारगाँवकर का नाम आधुनिक संस्कृत साहित्य में किसी परिचय का मोहताज नहीं है | राष्ट्र को समर्पित अपनी कविता में वे लिखती हैं -

हे प्रिय भारत, हे प्रिय भारत |

उतंगस्त्वं इह जगति |

हिन्दसागर: तव चरणे | द्वौ रत्नाकरौ तट सुबाहु

हिमाद्रिस्तव मस्तके | गंगायमुने कण्ठभूषणे||

नानाभाषा नानाधर्मा: महासंस्कृते: त्वं निधानम् ||

दयाक्षमायो: अमृतसिन्धु: | मानवता हि तव मनसि ॥

डॉ. सावित्री देवी शर्मा –इसका जन्म 15 अप्रैल सन 1930 ई. में हुआ था | इनके पिता का नाम पं. रामस्वरूप पाराशरी है |

प्रकाशित रचनायें – संस्कृतकाव्याजलि (काव्य संग्रह) , संस्कृत गीताञ्जलि | इन्होंने 'संस्कृत –गीताञ्जलि:' में लिखा है –

राष्ट्रहितं सर्वोपरि नित्यं मन्तव्यं सौहार्दपरै: |

स्वार्थभावं परित्यज्य ध्यातव्यं लोकहितं पुण्यं ||

सुप्रसिद्ध आशुकवि प्रो.रामसुमेर यादव (लखनऊ विश्वविद्यालय संस्कृत विभाग के पूर्व विभागाध्यक्ष) लिखते हैं (संभाषण संदेश पत्रिका में प्रकाशित)–

ऋषिपूजिनपावनपुण्यपदं

मुनियोगयुतं कमनीयपदम् ।

गुरुगौरवसम्पदसंललितं

भज भारतभूमिपदं सुखदम् ॥1॥

रमणीयपदं वनिकाकलितं

कुसुमस्तबकैरतिचारुतरम् ।

अपि कोकिलरागयुतं भुवनं

भज भारतभूमिपदं सुखदम् ॥2॥

प्रभुरामसुपादसुधूलिधरं

सुखबाधकतत्त्वहरं सकलम् ।

कृषिभूमिसुशोभितलोकशिवं

भज भारतभूमिपदं सुखदम् ॥3॥

शरणागतरक्षणधर्मपरं

भुवि भोगमिदं न वृथा कथनम् ।

शशिभास्करयोरतिदीप्तवरं

भज भारतभूमिपदं सुखदम् ॥4॥

तपसैधितधैर्यसुशौर्ययुतं

अरिसैन्यविनाशकरं त्वरितम् ।

गुणपूरितवन्दितराष्ट्रवरं

भज भारतभूमिपदं सुखदम् ॥5॥

डॉ.शशि तिवारी – दिल्ली विश्वविद्यालय के मैत्रेयी महाविद्यालय की उपाचार्या डॉ.तिवारी लिखती हैं -

पश्य मम भारतम् , पश्य मम भारतम्

अत्र वेदामृतम् अत्रसंस्कृतामृतम्

अत्र विद्यामृतम् अत्र गंगामृतम्

पश्य मम भारतम् ||

शोभते भूतले राजते सर्वदा

देवतैर्वन्दितं ज्ञानयोगावृतम्

पश्य मम भारतम् ||

यत्र बाईबिल –गीता –कुरानादिभि:

यस्य गुणगायनं भूरि मधुरं कृतम्

पश्य मम भारतम् ||

भारत देश के गौरवगाथा का वर्णन करते हुए श्रीकल्ला जी वैदिक विश्वविद्यालय राजस्थान के कुलपति प्रो.ताराशंकर शर्मा पाण्डेय लिखते हैं-

प्रचण्डशूरवीर हे! विधेहि राष्ट्ररक्षणम्।

विधेहि धीरवीर हे! मदीयराष्ट्ररक्षणम्॥

विधेहि राष्ट्ररक्षणम्॥1॥

मातृभूमिवन्दनं मदेकधर्मसंश्रुतम्

आत्मराष्ट्ररक्षणं त्वदेककर्मसङ्गतम्।

राष्ट्ररक्षणे क्षमा समस्तलोकबोधिका

धर्मकर्मपावना लसेन्मनःसु भावना॥

प्रचण्डशूरवीर हे! विधेहि राष्ट्ररक्षणम्।

विधेहि धीरवीर हे! मदीयराष्ट्ररक्षणम्॥

विधेहि राष्ट्ररक्षणम्॥2॥

आङ्ग्ललोकपीडिता जनाः त्वयैव रक्षिताः

चीनपाकसैनिका: पुरा त्वयैव मर्दिताः ।

सीम्नि शत्रुचारिणः शृणु प्रगुप्तमर्म रे!

देशभूमिरक्षितः ! स्मर त्वदीयकर्म रे !

प्रचण्डशूरवीर हे! विधेहि राष्ट्ररक्षणम् ।

विधेहि धीरवीर हे! मदीयराष्ट्ररक्षणम् ॥

विधेहि राष्ट्ररक्षणम् ||3||

रामराज्यकल्पना कृता महात्मगान्धिना

शत्रुपाकलोकिताऽद्य सीमभूः कुदृष्टिना ।

पश्य पाकदुष्कृतं जगज्जनैर्विनिन्द्यते

अस्त्रशस्त्रसज्जितो भुवं त्वमेव रक्ष रे ! ॥

प्रचण्डशूरवीर हे! विधेहि राष्ट्ररक्षणम् ।

विधेहि धीरवीर हे! मदीयराष्ट्ररक्षणम् ॥

विधेहि राष्ट्ररक्षणम् ॥4॥

चण्डरूपचण्डिका भवेद् त्वदीय-वीरता

कालरूपकालिका भवेद् त्वदीय-शूरता ।

कालदण्डपातनं कुरु त्वमेव वीर रे!

शत्रुसैन्यनाशनं शुभं त्वदीयकर्म रे ! ॥।

प्रचण्डशूरवीर हे! विधेहि राष्ट्ररक्षणम् ।

विधेहि धीरवीर हे! मदीयराष्ट्ररक्षणम् ॥

विधेहि राष्ट्ररक्षणम् ॥5॥ ||

x x x

भारतं नाम स्वतन्त्रम्

क्रियते यदि दृष्टिपात:

द्वैधीभावः सदैव जातः

अतः परै: शासितं नित्यं

पृच्छतु नाम तदादित्यं

राष्ट्रं जातं परतन्त्रम् ।

भारतं नाम स्वतन्त्रम् ॥

पठ्यते नित्यं समाचार:

सर्वत्रैव भ्रष्टाचार:

जायते परस्परमाक्षेपः

कथं भवेद् वै प्रत्याक्षेपः

एतादृक् किं लोकतन्त्रम् ।

भारतं नाम स्वतन्त्रम् ॥

लोको जायेत जागरूकः

सदा दीनेषु दयालुकः

भुवनेषु भद्रं पश्येम

शरदः शतं वै जीवेम।

को ददातु गुरुमन्त्रम् ?

भारतं नाम स्वतन्त्रम्॥

प्रो.बनमाली बिश्वाल 'वन्दे प्रिय भारतम्' कविता लिखते हैं कि देश के सभी नागरिकों को राष्ट्र की सेवा करनी चाहिए। अपने सत्कर्मों द्वारा उसमें सदैव श्रीवृद्धि करना चाहिए।

याता न: पितरो विधाय महती: सेवा: स्वराष्ट्रस्य वै

प्राणांस्तैतृणवद् विचिन्त्य महतो राष्ट्रस्य रक्षा कृता।

तन्मार्गे चलितुं यते परमहं योग्यो न तेषामिव

सन्मार्गे सततं स्वकीयचरितं नेतुं कथञ्चिद् यते॥1॥

सा विद्या खलु या विमुक्तिपथगा ज्ञानञ्च यन्मोक्षदं

एवं शिक्षयितुं किमस्ति जगतः शक्तिर्विना भारतम् ?

योगं भोगपरं वदन्ति सकले विश्वे यदा भौतिकाः

मोक्ष-प्रापक-साधनञ्च मनुते लोकस्तदा भारते॥2॥

राष्ट्रस्यास्य किमस्ति शक्तिरतुला ज्ञातुं यतन्ते जनाः

विश्वेऽद्यापि रहस्यमस्ति किमिदं तथ्यं न मानास्पदम् ?

ज्ञातव्यं न मयैव किन्तु निखिले विश्वे समैर्बान्धवैः

संक्षिप्यात्र च भारतीय-चरितं संख्यातुमीहे क्वचित्॥3॥

यत्राम्भोधिजलं स्वराष्ट्र-महिमाख्याने तरङ्गायितं

देवांस्तोषयितुं समर्चनविधौ चित्तञ्च लालायितम्।

क्षेत्रं यत्र सदा जनानदयितुं धान्यैः सुवर्णायितं

भारतवर्ष की रक्षा के लिए भगवान शंकर से विनती करते हुए डॉ.इच्छाराम द्विवेदी 'प्रणव' लिखते हैं-

हे शम्भो! करुणामय ! त्वमधुना पीयूषसिक्तो विभो ।

किन्त्वद्यास्तु विषोल्बणा तव तनु: क्रोधोर्जिता भारते ।

नैके भारतमातरं दनुसुता: संपीडयन्ति क्षितौ ।

शूलनैव कृतान्तमन्दिरमिमान् त्वं सत्वरं प्रेषय ॥1॥

तोका: निश्छलमानसाः प्रतिदिनं हन्यन्त एवात्र हा !!

बालाः बर्बरकैः विधूततनवः प्राणांस्त्यजन्तीह कौ ॥

वृद्धा लोलुपवृत्तिकैः नृपशुभिः लुण्ठ्यन्त एवानिशं

पापौघः पृथुतामुपैति भगवँस्ते भारतेऽनारतम् ॥2॥

नेतारस्तु विलुण्ठने प्रतिपलं देशश्रियः संहिताः ।

तेषां पादयुगेषु चानतनराः ये दस्यवः तेऽनिशम्॥

प्राणान् द्रव्यचयान्यथो सुयुवतीसम्मानराशीः अहो !

स प्रत्येकं दिवसे हरन्ति खलु तान्नूनं जघान द्रुतम् ॥3॥

निर्लज्जाः नृपनीतिदूषणपरा: स्वातंत्र्यरूपं सुतं ।

तीक्ष्णाभिश्छुरिकाभिरत्र सदने नित्यं हि ते हन्ति भोः !

सर्वत्रैव विसारयन्ति कुटिलां स्वां नीतिसंसर्पिणीं ।

यस्याः दंशमवाप्य राष्ट्रजनता नाशाय सा कल्पते ॥4॥

'विभाति भारतम्' कविता में डॉ.महेश झा लिखते हैं-

पुरातनं पुरस्कृतं विभाति भारतम् ।

सुविश्रतार्यसंस्कृतिं दधाति भारतम् ॥

उदारभावनाभरेण सर्वमीक्षते ।

शुभातिथेयमद्भुतं चकास्ति भारतम् ॥

विरोधिदेशबाधितं सुशासितं बुधः ।

शनैर्विकासवर्त्मनि प्रयाति भारतम् ॥

गिरिप्रपातगुञ्जितं वनश्रियान्वितम् ।

प्रसिद्धजाह्नवी नदी पुनाति भारतम् ॥

हिमालयोऽतितुङ्गशृङ्गपर्वतो महान्।

प्रचण्डशत्रुतः सदैव पाति भारतम् ॥

सदार्षधर्मनिर्भरं दयार्द्रविस्तराम्।

विरोधिनेऽपि संश्रयं ददाति भारतम् ॥

विभिन्नदेशमध्यशान्तिसख्यसौख्यदम् ।

नयं समग्रसम्मतं हि लाति भारतम् ॥

विनाशहेतु आणवीयशस्त्रसाधनाम्

विकासरोधि बाधकं जहाति भारतम् ॥

घृणास्पदं विनाशकारिणीं पराश्रिताम् ।

श्वपाकपद्धतिं सदा भृणाति भारतम् ॥

डॉ.निरंजन मिश्र कहते है कि जहाँ लोग गुणों की अपेक्षा धन को महत्त्व प्रदान करते हैं। ऐसे लोग धन्य हैं।

क्रीतैर्यत्र जनैस्सभामधुरता नेतुर्जयोद्घोषणै:

पातुं भाषणमेव यान्ति जनता द्रव्यार्जनायोत्सुका: ।

प्रीतिर्यत्र धनार्जने न कथने सर्वे स्वलाभार्थिनो

दोषोरोपणपण्डितप्रगुणितुं वन्दे सदा भारतम् ॥ श्लोक संख्या 95

'मातृभूमि-पञ्चकम्' कविता में युवाकवि पंकज कुमार झा लिखते हैं –

जय महामङ्गले ! जय सदा वत्सले !

धर्मकेतूस्थिते ! सिंहपीठार्जिते ! ।

स्वर्गभूराजिते ! पुण्यश्रीलायुते !

सुन्दरि ! सर्वशुभ्रातिशुभ्रान्विते ! ॥1॥

शीर्षहैमस्थिते ! मध्यदेशः कटे !

बङ्गवामे हि राराज्यते सर्वगे ! ।

दक्षगुर्जप्रदेशार्चिते ! भव्यके !

नौमि वर्षे नवे मातरं भूतले ॥2॥

केशरीवर्णबाणाङ्करासार्चिते !

श्वेतसौन्दर्यचक्रान्विते ! सूत्तमे ! ।

श्यामले भूतले सौख्यदात्रि ! शुभे !

जय महागौरि ! त्वार्ये ! सदा शर्म्मदे ! ||3||

शुद्धतत्त्वार्पिते ! सिद्धभक्तार्चिते !

सौम्यतानन्दश्वेतेन्दुशोभान्विते ! ।

वेदनादादिशब्दात्सदा लालिते !

घोषिते ! पोषिते ! तोषिते ! प्रार्चिते ! ||4||

शुभ्रचन्द्रार्कज्योतिप्रभामण्डिते !

स्वच्छताराधिताभ्रामुखे ! चन्द्रिके ! ।

भूतिलाशाप्रमोदावहालम्बिते !

स्थानरम्यार्यवर्त्ताभिधे ! पङ्कजे ! ||5||||25

x x x

प्राचीनादिह भारतादतितमां बाभाति मे भारतं

काले भेदमुपागते बहुरुचौ नानापथे सुप्रिये ।

पूर्वाचार्यसमूहसुन्दरमतिप्रोल्लासिते प्रोर्जिते

हृद्यं सर्वसुखप्रदं शुभकरं देशोत्तमं भारतम् ||1||

द्वीपेषूत्तमजम्बूनामरमणं स्थानं सुधाप्लावितं

तस्मिन् भारतभूमिरस्ति ललिता दुष्प्रापमास्ते जनिः ।

तल्लब्ध्वेह सुकर्म यैर्हि विहितं संसेविता मातृ भूः

धन्यास्ते भुवि मातृसेवनपराः शेषा जघन्या जनाः ||2||

केतौ हारितकं सुलक्ष्यत इदं प्रोन्नाययन् मानवान्

श्वेतेनाखिल ना सुहार्दभरितः सम्पोष्यते सर्वदा।

सम्प्राप्तेऽरिगणस्य दर्पदलनं संशिक्षते केशरं

यन्मध्ये हि शिवाङ्कितं तदमलं चक्रान्वितं भारतम् ||3||

माता भूमिरहं सुतो निजबलेनैषा सुरक्ष्या सदा

स्वर्गाच्चाप्यधिकारसुपूज्यचरणा श्रीला प्रसूर्भूस्तथा।

येषां नास्ति सुदेशगौरवमहो ! स्वं राष्ट्रधाम प्रति

तान्मन्ये भुविगात्रप्राणरहितान् हेयान् गुणैर्वर्जितान् ||4||

मन्येऽल्पावधिनैव यास्यति शुभं रूपं सुदेशो मम

यः स्वर्णाख्यखगः स्म भण्यत इह पूर्वैः सुधीभिर्मुदा।

तादृक् कीर्त्तिसदः सुशान्तिमतिभी राराज्यमानं ह्यदो

राज्यं राममियेष मानसकवियों लोकहृद्यो गुरुः ॥5॥

साम्राज्यं वरिवर्त्तु भ्रष्टिरहितं तिष्ठन्ति नद्यो यथा

कावेरी सरयू महेन्द्रतनया गङ्गादयः पुण्यदाः।

शिक्षाभूमिरियं समुन्नततरा विश्वालये देववाग्

जुष्टा सर्वजनैरुपास्यगुणिनी सर्वोन्नतिप्रीतिभाक् ।।6।।

वीरा भारतभूर्महत्वभरिताऽराति प्रपञ्चान् परान्

सोढं सोढमतीवहीनकुदशां नव्यान् विचारान् ययौ ।

स्वातन्त्र्येण हि वञ्चिता वयमहो ! पादप्रहारान् भृशं

क्षाम्यामो नहि जीवनं सुसफलं स्वातन्त्र्यमस्मद्धनम् ||7||

श्रीमानेष न केवलः स्थलवरस्त्वेषा परा देवता

ह्यस्यां छत्रपसच्छिवाजिसदृशो भूतो न भावीतरः ।

तस्मादप्यतियातकालत इदं मौगल्यकालादपि

स्वातन्त्र्येण समुज्ज्वलल्लसति सत्कर्मारतं भारतम् ।।8।।

अलीगढ़ के प्रसिद्ध कवि प्रेम शंकर शर्मा लिखते हैं कि -

भारतराष्ट्रं लोकतान्त्रिकम् ।

अत्र स्वातन्त्र्यं स्वधार्मिकम् ।। 1।।

देशोऽयं वर्तते पुराणः,

विश्वात्मा मानवता-प्राणः,

लोकजीवनं पारमार्थिकम् ।।3।।

प्राचीना संस्कृतिः सभ्यता,

कणे कणे भगवद् व्यापकता,

भगवत्त्वं तत्पराभौतिकम् ।।4।।

अधुनातनमपि शिक्षातन्त्रम्

नवमन्त्रो प्रचलति नव-यन्त्रम्

यतो वर्तते युगं यान्त्रिकम् ।।5।।

पुत्राः पित्रा सह निवसन्ति,

पाठमेकतायाश्च पठन्ति,

भवति जीवनं पारंपरिकम् ।।6।।

चितो जनमतेन न विधायकः,

तेषामेको राष्ट्रनायकः,

चिन्मः सत्यं शिवं शान्तिकम् ।।7।।

x x x

दिव्यात्मा विश्व प्रकाशते भास्कर-भारत-देशः।

गुञ्जति गीता-संदेशः ।।1।।

ऋषिभिर्मुनिभिर्यतीयोगिभिर्ज्ञानं पूर्वं दत्तम्,

भारत-भूमिः सदा शिक्षते रामकृष्णयोर्वृत्तम्,

ईश्वर-शरणं गन्तव्यं सर्वोपरि कृष्णादेशः ।।2।।

शोभन्ते निष्क्रियाः न तस्मात्कर्म सदा वरणीयम्,

मोक्षार्थिने फलेच्छारहितं कर्म किन्तु करणीयम्,

कर्मसु कौशलमेव तु योगः कथयतीति योगेशः ।।3।।

कर्त्ताभावो यदा विद्यते कर्मफलं भोक्तव्यम्,

सर्वस्वं भगवन्तं मत्वा तस्मै समर्पितव्यम्,

क्षयति कल्मषान् क्लेशान् कष्ट कृष्ण एव करुणेशः ||4||

भारतदेशे विद्यन्ते गौरिव गुरुगीतागङ्गाः,

जले स्थले आकाशे राजति राष्ट्र-ध्वजा-त्रिरङ्गा,

सफलाः कथं शत्रवो रक्षति हिमालयो गोपेशः ? ||5||

विश्वस्मिन् विदुषां वीराणां भूमिरियं विख्याता,

प्राणेभ्योऽपि प्रिया समेषां वन्द्या भारतमाता,

पुनः भविष्यति भारतस्य गौरवपूर्णः प्रभुवेशः ||6||

भगत-सुभाष-गान्धि-तिलकाः भारतमातुः सुकुमाराः,

'प्रेम'-शान्ति-करुणा-सेवा-प्रसारणी-भारतधारा,

हिंसावैरघृणा-भावानामिह वर्जितः प्रवेशः ||7||

डॉ.जगन्नाथ पाठक भारत की भिन्नता में अभिन्नता की बात करते हुए कहते हैं-

यद्यपि भिन्ना वर्णा भिन्ना धर्मा सम्प्रदायश्च।

भिन्ने तथाप्यभिन्नं यत्किञ्चिद् भारतीयत्वम् ॥

अन्यत्र भी-

नानाभेददसादिह भिन्नेष्वपि मानवेषु यदभिन्नम्।

विश्वमिदं नीडमिव प्रतिभात्येकं नु तेनैव ॥

पद्मश्री प्रो.अभिराज राजेन्द्र मिश्र कहते हैं कि पृथ्वी पर यदि कभी पुनर्जन्म हो तो भारतवर्ष में।

भवेदिह मर्त्यलोके जन्म मम भूयोऽपि शतवारम् परं स्यात् भारते।

विराजन्तामनन्ता: शालयो नतमञ्जरीपुञ्जा :

सुशोभनां वनान्ता दुषप्रवेश लसन्निचुलकुञ्जा:

भवेदिह मृत्तिकायां विलुठनं भूयोऽपि शतवारम् परं स्यात् भारतम्म ॥

डॉ.लक्ष्मी नारायण पाण्डेय लिखते हैं-

भारते भारती किङ्करी दृश्यते

जीवनान्निर्गता माधुरी दृश्यते।

चाटुचर्चार्चिता चातुरी चर्चिता

अर्थहीनाधुना वैखरी दृश्यते।

सन्ततिश्शोकमग्ना मुनीनामहो

श्रीविहीना कथं जित्वरी दृश्यते।

कीर्तिता रत्नगर्भा धरानन्ददा

दीनहीना स्तुता शाङ्करी दृश्यते।

भाषणेषु प्रजाराधनं श्रूयते

वृत्तिराराधिता ह्यासुरी दृश्यते।

पीड्यमाना द्विरेफैर्भृशं लोलुपैर्

मूर्च्छिता माधवे मञ्जरी दृश्यते।

मध्यधारागतोत्तुङ्गवीचीषु हा

कम्पमाना स्खलन्ती तरी दृश्यते ॥

संस्कृत भारती बेंगलूरू से प्रकाशित 'शिशुसंस्कृतम्' पुस्तक के पृष्ठ 11 पर एक बहुत ही सुन्दर गीत प्राप्त हुआ है | जिसमें कवि का नाम नहीं दिया हुआ है |

शक्तिसम्भृतं युक्तिसम्भृतं

शक्तियुक्तिसम्भृतं भवतु भारतम् ॥

शस्त्रधारकं शास्त्रधारकं

शस्त्रशास्त्रधारकं भवतु भारतम् ॥

रीतिसंस्कृतं नीतिसंस्कृतं

रीतिनीतिसंस्कृतं भवतु भारतम् ॥

कर्मनैष्ठिकं धर्मनैष्ठिकं

कर्मधर्मनैष्ठिकं भवतु भारतम् ॥

भक्तिसाधकं मुक्तिसाधकं

भक्तिमुक्तिसाधकं भवतु भारतम् ॥

डॉ.नरेन्द्र लिखते हैं -

वयं बालका भारतभक्ताः

वयं बालिका भारतभक्ताः

वयं हि सर्वे भारतभक्ताः

पृथ्वीं स्वर्गं जेतु शक्ताः ॥ वयम् ॥

वयं सुधीराः वयं सुवीराः

हृष्टमानसाः पुष्टशरीराः

भूरि पठामो भूरि लिखामो

भवितास्मो जनहिते नियुक्ताः ॥ वयम् ॥

जाति-धर्म-मत-भेदं त्यक्त्वा

भारतवर्षं पूज्यं मत्वा

भगवद्भावं हृदये धृत्वा

भारतसेवायामनुरक्ताः ॥ वयम् ॥

डॉ.जनार्दन हेगड़े की राष्ट्रवाद पर एक बहुत प्रसिद्ध रचना है –

मृदपि च चन्दननस्मिन् देशे ग्रामो ग्रामः सिद्धवनम् ।

यत्र च बाला देवीस्वरूपा बालाः सर्वे श्रीरामाः ॥

हरिमन्दिरमिदमखिलशरीरम्

धनशक्ती जनसेवायै

यत्र च क्रीडायै वनराजः

धेनुर्माता परमशिवा ॥

नित्यं प्रातः शिवगुणगानं

दीपनुतिः खलु शत्रुपरा ॥ मृदपि च.....

भाग्यविधायि निजार्जितकर्म

यत्र श्रमः श्रियमर्जयति ।

त्यागधनानां तपोनिधीनां

गाथा गायति कविवाणी

गङ्गाजलमिव नित्यनिर्मलं

ज्ञानं शंसति यतिवाणी || मृदपि च....

यत्र हि नैव स्वदेहविमोहः

युद्धरतानां वीराणाम् ।

यत्र हि कृषकः कार्यरतः सन्

पश्यति जीवनसाफल्यम्

जीवनलक्ष्यं न हि धनपदवी

यत्र च परशिवपदसेवा || ॥ मृदपि च .....॥

श्री सीताराम आचार्य लिखते हैं -

गुणगणमण्डित-यदुवरलसिता

राजति भारतमाता ।

नीतिबोधकपरात्परगीता

बोधकयोगिजनाप्ता || गुणगणमण्डित.......

रम्यसुरालय- सरिदाक्रीडैः

भव्यसुललितनिजाङ्गा ।

अभिमतसिद्धा धन्या

शुभफलवृद्धिसुमान्या

जीयाद् भारतशोभा || गुणगणमण्डित.....

अनुदिन- मङ्गलदायक - दयया

भारतमाता जयतात् ।

जयतात्, जयतात्, जयतात्

निजजनगणमवतात्

भारतमाता जयतात् ।। गुणगणमण्डित ... ।।

जैन कालेज आरा (बिहार) के असिस्टेंट प्रोफेसर डॉ.संजय कुमार चौबे लिखते हैं-

वयं बालका भारतभूताः शूरा वीरा मनस्विनः।

निर्भीका निर्द्वन्द्वचेतसस्तेजोयुक्तास्तपस्विनः ।।

सिंहसुतानां दन्तागणने भरतो विश्वे विख्यातः ।

कौमारे गतवयः प्रवीरो लोको येन हि संत्रातः ।।

तस्य वंशजाः पौरुषयुक्ताः सिंहसमा ऊर्जस्विनः ।। वयं....।।

लवकुशवीराभ्यां हि निरुद्धस्त्वश्वमेधगततुरङ्गमः ।

सेनापतिः कालजिन् नष्टः लवबाणैर्युधि दुर्दमः ।।

आश्रमजन्मानोऽपि विश्रुताः केचिदद्भुता धन्विनः । वयं... ।

न्यायकाङ्क्षि-नचिकेता ख्यातः मृत्योर्द्वारं संयातः ।

कृत्वा मुष्ट्यां मुदा सफलतां ततः स्वगेहं प्रतियातः ।।

सत्यपालने तातस्यापि लोकेऽस्मिन् प्रतिरोधिनः ।। वयं..।।

बाल्ये वयसि ध्रुवेण सिद्धिः स्वीयतपोभिः सम्प्राप्ता ।

'ध्रुवतारा' भूत्वा गगनेऽस्मिन् सदा काशते नः भ्राता ।।

सर्वजनानां पुरतो नित्यं वयं प्रकाशप्रतानिनः ॥ वयं... ॥

अष्टावक्रः दिव्यङ्गोऽपि शास्त्रार्थी प्रथितश्चतुरः ।

यस्य पुरो जनको राजर्षिः मूको जातः सुधीवरः ॥

अस्त्रे शस्त्रे शास्त्रार्थेऽपि वयं सदैवायासिनः ॥ वयं... ॥

वने मृदो रचयित्वा मूर्त्तिं गुरोरेकलव्यः श्रेष्ठः ।

तस्माद् धनुर्धरः सञ्जातः दृढसङ्कल्पी गुरुनिष्ठः।

गुरुवचसि श्रद्धासम्पन्ना असुदानेऽप्यतिमानिनः ॥ वयं..॥

चक्रव्यूह भेदनेऽभिमन्युः परमप्रतापी निष्णातः।

यं दृष्ट्वा पुरतो रिपुव्यूहः भूरि सकम्पः सञ्जातः ॥

योद्धुं तद्वद् रणे धुरीणाः शत्रुनाशने तरस्विनः । वयं..॥

कुवलयाश्व उपमन्युरारुणिस्तथास्तिकः प्रह्लादः ।

इत्यादिभिः स्वजीवनमार्गो बालैर्विहितोऽबाधः ॥

दिव्यपद्धतिं रचयामो नः परंतपा मेधाविनः । वयं...॥

निष्कर्ष-राष्ट्रवाद एक ऐसे भावना है जिसका सम्बन्ध मनुष्य के अन्तश्चेतना से है। जिस प्रकार मनुष्य के मन में ईर्ष्या-द्वेष, प्रेम-घृणा,आदि मनोभाव उत्पन्न होते हैं, उसी प्रकार राष्ट्र के प्रति राष्ट्रवाद की भावना भी लोगों के हृदय में उत्पन्न होती है। प्रत्येक दृष्टि से राष्ट्र को बनाना एवं उसकी प्रगति चाहने की भावना ही राष्ट्रीय भावना है। अपनी जन्मभूमि से प्रेम, प्राचीन परम्पराओं के प्रति

आदरभाव, अपने देश के प्रत्येक प्राणी, वस्तु और उसकी सुन्दरता के प्रति ममत्व की भावना तथा अपनी सभ्यता और संस्कृति के प्रति आस्था का हृदय में विद्यमान होना ही सच्चा राष्ट्रवाद है।